RNI Title Code : MPBIL02445

सेवा मंथन

वर्ष 2 अंक 15 (पाक्षिक) इन्दौर, 1 से 15 अगस्त 2022 पृष्ठ 8 मूल्य 10 रुपये

पीएम मोदी बोले, 'हर घर तिरंगा' अभियान का हिस्सा बनें देशवासी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो प्रसारण, मन की बात के 91 वें एपिसोड के माध्यम से राष्ट्र को संबोधित किया। इससे पहले पीएम मोदी ने ट्वीट कर देशवासियों को मन की बात कार्यक्रम के आमंत्रित किया। इस कार्यक्रम में पीएम मोदी ने कई तरह के मुद्दों पर चर्चा की। अपनी मन की बात पर पीएम मोदी ने लोगों को संबोधित करते हुए अपील की कि 31 अगस्त तक पूरे देशभर के लोग हर घर तिरंगा अभियान का हिस्सा बनें। पीएम ने कहा कि इस बार का स्वतंत्रता दिवस अभियान बहुत खास है। पीएम ने अपने संबोधन में ये भी कहा कि साथियों आज़ादी के अमृत महोत्सव में हो रहे इन सारे आयोजनों का सबसे बड़ा सन्देश यही है कि हम सभी देशवासी अपने कर्तव्य का पूरी निष्ठा से पालन करें। तभी हम उन अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों का सपना पूरा कर पायेंगे और उनके सपनों का भारत बना पाएंगे।

आज़ादी के 75 वर्ष

पीएम मोदी ने कहा कि इस बार भारत अपनी आज़ादी के 75 वर्ष पूरे करेगा। हम सब लोग अद्?भुत और ऐतिहासिक पल के गवाह बनने जा रहे हैं। उन्होंने कहा, 'हम सारे देशवासी 31 जुलाई यानी आज के दिन सरदार उधम सिंह की शहादत को नमन करते हैं। मुझे देखकर खुशी होती है कि 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' जन आंदोलन का रूप ले रहा है।सभी और अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़े लोग इसमें हिस्सा ले रहे हैं'।

रेलवे की भूमिका-पीएम मोदी ने कहा कि इस जुलाई में एक रोचक प्रयास हुआ है जिसका नाम 'आज़ादी की रेलगाड़ी और रेलवे स्टेशन' है। इस प्रयास का लक्ष्य है कि लोग आज़ादी की लड़ाई में भारतिय रेलवे की भूमिका को जानें। देश में अनेक रेलवे स्टेशन हैं जो स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास से जुड़े हैं। उन्होंने आगे कहा कि झारखंड के गोमो स्टेशन को अब नेताजी सुभाष चंद्र बोस जंक्शन, गोमो के नाम से जाना जाता है क्योंकि उन्होंने इसी स्टेशन से सवार होकर ब्रिटिश अफसर को चकमा दिया था। आपने काकोरी स्टेशन का नाम भी सुना होगा इस स्टेशन से राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्लाह खान का नाम जुड़ा है।

कोरोना पर बोले पीएम मोदी-पीएम मोदी ने कोरोना पर कहा कि कोरोना के खिलाफ आयुष ने वैश्विक स्तर पर अहम भूमिका निभाई है। दुनिया में आयुर्वेद और भारतीय औषधियों के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। हाल ही में, एक वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन हुआ था। इसमें करीब 10 हजार करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव मिले हैं।

भारत की झोली में अब तक 4 मेडल, वेटलिफ्टिंग में खिलाड़ियो ने दिया शानदार प्रदर्शन

बर्मिंघम। कॉमनवेल्थ गेम्स 2022 में भारत की झोली में अब तक कुल 4 मेडल आ गए हैं। ये चारों मेडल भारत ने वेटलिफ्टिंग में हासिल किया हैं। मेडल जीतने का आगाज सबसे पहले भारत के वेटलिफ्टर संकेत सरगर से शुरू हुआ। संकेत ने अपने बेहतरीन प्रदर्शन के बदौलत भारत को पहला मेडल दिलाया। संकेते ने वेटलिफ्टिंग में सिल्वर मेडल जीता तो वहीं गुरुराज पुजारी ने कांस्य पदक जीता। इसके बाद भारत की मीराबाई चानू ने गोल्ड मेडल जीतकर भारत का नाम रौशन कर दिया। वहीं बिंद्यारानी देवी ने रजत पदक जीत कर चौथा मेडल देश के नाम किया। देश को पहला मेडल दिलाने वाले संकेत ने कहा कि 'मैं खुश हूं लेकिन खुद से नाराज भी हूं क्योंकि मुझे स्वर्ण पदक जीतना था। मैंने इसके लिए तैयारी भी की थी और केवल एक की दूरी पर था।

हालांकि मुझे इस पदक के मिलने पर खुशी है कि यह देश का पहला पदक है।प्रधानमंत्री मोदी ने मेडल जीतने वाले सभी खिलाड़ियों को बधाई दी और कहा कि 'कॉमनवेल्थ गेम्स में उनका रजत पदक जीतना भारत के लिए एक अच्छी शुरुआत है'।मीराबाई चानू ने महिलाओं के 49 किलोग्राम वेट कैटेगरी में गोल्ड जीता। चानू ने महिला 49 किग्रा स्पर्धा में कुल 201 किग्रा का वजन उठाकर अपना ही रिकॉर्ड तोड़ डाला। वहीं वेटलिफ्टर बिंद्यारानी देवी ने महिलाओं के 55 किलोग्राम कैटेगरी में सिल्वर जीत कर भारत का नाम रौशन किया। बता दें कि बिंद्यारानीका यह पहला कॉमनवेल्थ गेम्स है जिसमें उन्होंने मेडल जीता है। वहीं पुरुषों के विटलिफ्टिंग की बात करें तो वेट लिफ्टर गुरुराज पुजारी ने पुरुषों के 61 किलोग्राम भार वर्ग में कुल 269 किलोग्रामके साथ कांस्य पदक हासिल किया। वहीं भारत के संकेत महादेव सरगर ने कॉमनवेल्थ गेम्स 2022 में 55 किलोग्राम वेट कटेगरी में 248 किलोग्राम भार लिफ्टिंग कर देश के झोली में पहला मेडल दिया।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन फिर हुए कोरोना पॉजिटिव, इसी हफ्ते वायरस से हुए थे ठीक

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन शनिवार को एक बार फिर कोविड-19 से संक्रमित पाए गए। महज तीन दिन पहले ही कोरोना वायरस संक्रमण से मुक्त होने के बाद उनका पृथक-वास समाप्त हुआ था। व्हाइट हाउस ने कहा है कि एंटी वायरल दवा से इलाज के बाद बाइडन में संक्रमण का फिर से उभरना एक दुर्लभ मामला है। व्हाइट हाउस के चिकित्सक डॉ. केविन ओ'कोनोर ने एक पत्र में कहा कि बाइडन में ''इस बार कोई भी लक्षण नहीं उभरे हैं और वह अच्छा महसूस कर रहे हैं।''

रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र के दिशा-निर्देशों के अनुसार, बाइडन एक बार फिर कम से कम पांच दिनों के लिए पृथक-वास में रहेंगे। संक्रमण मुक्त होने तक वह व्हाइट हाउस में ही रहेंगे। एजेंसी ने कहा कि संक्रमण के फिर से उभरने के ज्यादातर मामलों में लक्षण हल्के रहते हैं और इस दौरान मरीजों के गंभीर रूप से बीमार पड़ने का कोई मामला सामने नहीं आया है।

वायुसेना ने अपने बेड़े में बचे चार मिग-21 लड़ाकू स्क्वॉड्रन को हटाने के लिए तीन वर्षों की समयसीमा तय की

नई दिल्ली । भारतीय वायुसेना अपने बेड़े में बचे चार मिग-21 लड़ाकू स्क्वॉड्रन को वर्ष 2025 तक चरणबद्ध तरीके से हटा देगी। सूत्रों ने बताया कि इनमें से एक स्क्वॉड्रन को इसी साल सितंबर में हटाए जाने की उम्मीद है।उन्होंने कहा कि वायुसेना अगले पांच वर्षों में मिग-29 लड़ाकू विमानों के तीन स्क्वॉड्रन को भी चरणबद्ध तरीके से हटाने की योजना बना रही है। साथ ही उन्होंने कहा कि सोवियत मूल के विमान बेड़े को चरणबद्ध तरीके से हटाने की योजना वायुसेना के आधुनिकीकरण अभियान का हिस्सा है और इस कदम का राजस्थान के बाड़मेर में कल रात हुई मिग-21 की दुर्घटना से कोई संबंध नहीं है। विमान में सवार विंग कमांडर एम राणा और फ्लाइट लेफ्टिनेंट अद्वितीय बल की इस हादसे में जान चली गई। इस घटना के बाद, पुराने हो चुके मिग विमान एक बार फिर चर्चा में हैं।घटनाक्रम के बारे में जानकारी रखने वाले लोगों ने बताया कि 2025 तक मिग-21 के चारों स्क्वॉड्रन को बेड़े से हटाने की योजना है। श्रीनगर स्थित स्क्वॉड्रन नंबर 51 के लिये 30 सितंबर की 'नंबर प्लेट' तैयार होगी। 'नंबर प्लेट' का संदर्भ एक स्क्वॉड्रन को हटाए जाने से होता है। एक स्क्वॉड्रन में आम तौर पर 17-20 विमान होते हैं।इस स्क्वॉड्रन को 'सोर्डआर्म्स' के तौर पर भी जाना जाता है। यह 1999 के करगिल युद्ध के दौरान 'ऑपरेशन सफेद सागर' के अलावा भारत द्वारा किये गये बालाकोट हवाई हमले के एक दिन बाद पाकिस्तान की तरफ से 27 फरवरी 2019 को की गई जवाबी कार्रवाई के खिलाफ अभियान में भी शामिल थी।वायुसेना के बेड़े में फिलहाल करीब 70 मिग-21 लड़ाकू विमान और 50 मिग-29 विमान हैं। मिग-21 लंबे समय तक भारतीय वायुसेना के मुख्य लड़ाकू विमान रहे हैं। हालांकि, विमान का हाल का सुरक्षा रिकॉर्ड बेहद खराब रहा है।वायुसेना के बेड़े में मिग विमान 1963 से हैं।

बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट में देरी1.6 लाख करोड़ रुपये की अनुमानित लागत में होगी बढ़ोतरी

नई दिल्ली। देश की पहली 'हाई स्पीट रेल' या फिर कहें कि बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट पर काम जारी है। अहमदाबाद से मुंबई के बीच प्रस्तावित 1.6 लाख करोड़ रुपये के इस प्रोजेक्ट में देरी की आशंका है। ऐसे में इसे पूरा करने में अनुमानित लागत सीमा पार हो सकती है। मालूम हो कि कोरोना वायरस महामारी और भूमि अधिग्रहण में आई दिक्कतों के चलते यह देरी हो रही है। 2015 में हुए स्टडी में यह अनुमान लगाया गया था कि बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट को पूरा करने में 1.8 लाख करोड़ रुपये का खर्चा आ सकता है। लेकिन अब यानी कि 2022 में कई सारी चीजें बदल गई हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, भूमि अधिग्रहण में अनुमान से ज्यादा धन खर्च हुआ है। साथ ही सीमेंट, स्टील और अन्य कच्चा माल की कीमतें काफी बढ़ गई हैं। नेशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड का कहना है कि प्रोजेक्ट के लिए नई लागत की जानकारी अभी नहीं दी जा सकती है। भूमि अधिग्रहण का काम और सभी कॉन्ट्रैक्ट्स पूरे होने के बाद ही इसकी घोषणा की जा सकेगी। 508 किलोमीटर लंबे इस प्रोजेक्ट को पूरा करने की शुरुआती डेडलाइन 2022 ही थी। आधिकारिक आंकड़ों से पता चलता है कि केवल दादर और नागर हवेली में ही अब तक 100 फीसदी भूमि अधिग्रहण हो सका है। प्रोजेक्ट के लिए गुजरात में भूमि अधिग्रहण का काम 98.9% और महाराष्ट्र में 73% पूरा हुआ है। केंद्र सरकार का कहना है कि महाराष्ट्र में भूमि अधिग्रहण में लग रहा समय ही प्रोजेक्ट में हो रही देरी का मुख्य कारण है।

डिजिटल इंडिया से जुड़ेंगे भोपाल के 23 गांव

भोपाल। जिले के 23 गांव डिजिटल इंडिया से जुड़ेंगे। ये गांव बैरसिया व फंदा ब्लाक के हैं। इनमें बीएसएनएल की 4जी सेवा मिलेगी। इससे इन गांवों में रोजगार के अवसर भी खुलेंगे। दरअसल, केंद्र सरकार ने मोबाइल सेवा से वंचित गांवों के लिए 26,316 करोड़ रुपये की लागत वाली परियोजना को मंजूरी दी है। यह मंजूरी 27 जुलाई को दी गई है। इसमें मप्र के 3191 गांव शामिल है। इन्हीं में भोपाल के ये गांव भी शामिल है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2021 में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दिए संबोधन में सरकारी योजनाओं को पूर्णता प्रदान करने का आह्वान किया था, जिसके परिप्रेक्ष्य में यह राशि गांवों के लिए जारी की है। इस राशि से होने वाले कामों से डिजिटल इंडिया को बढ़ावा मिलेगा।

भोपाल के इन गांवों को किया चिन्हित-अनंतपुरा, शांतिनगर, पटानिया, हरिपुरा, आयापुरा, शाहपुरा, पढारिया

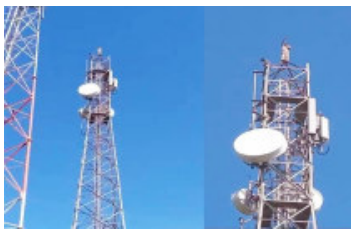

सकल, मस्तीपुरा, छापर, देहरी, राजीव नगर, छावनी पढार, शेखपुरा, समरधा, उंची लालोई, लालुखेड़ी, कीटगढ़, बाबरपुर, नर्सरीपुरा, गुर्जरपुरा, खेड़ली, टपरा गांव को शामिल किया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में मिलेगा रोजगार का अवसर

परियोजना से ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल कनेक्टिविटी उपलब्ध होने के बाद मप्र व केंद्र सरकार की विभिन्न ई-गवर्नेंस सेवाएं, बैंकिंग सेवाएं, टेली-मेडिसिन, टेली-एजुकेशन आदि को बढ़ावा मिलेगा। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

यह है परियोजना-परियोजना पर 26,316 करोड़ रुपये की कुल लागत आएगी। इस परियोजना के तहत देश के दूरदराज और दुर्गम क्षेत्रों में अवस्थित 24,680 वंचित गांवों में 4जी मोबाइल सेवा देने में आसानी होगी। परियोजना में पुनर्वास, नई बस्तियों, मौजूदा ऑपरेटरों द्वारा अपनी सेवाओं को वापस ले लेने, इत्यादि को ध्यान में रखते हुए 20 प्रतिशत अतिरिक्त गांवों को शामिल करने के प्रविधान है। केवल 2जी, 3जी कनेक्टिविटी वाले गांवों को अपग्रेड करके वहां 4जी कनेक्टिविटी सुलभ कराई जाएगी। परियोजना को बीएसएनएल द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत' के 4जी प्रौद्योगिकी स्टैक का उपयोग करते हुए कार्यान्वित किया जाएगा और इसका वित्त पोषण यूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड के जरिए किया जाएगा। बीएसएनएल पहले से ही 'आत्मनिर्भर' 4जी प्रौद्योगिकी स्टैक' का उपयोग करने की प्रक्रिया में है, जिसका उपयोग इस परियोजना में भी किया जा

542 सरकारी कालेज में छह हजार शिक्षकों के पद खाली

भोपाल। मध्यप्रदेश के 542 सरकारी कालेजों में छह हजार शिक्षकों के पद खाली है। उच्च शिक्षा विभाग ने अब भर्ती के कई पद स्वीकृत किए हैं। ऐसे में कालेजों में शिक्षण व्यवस्था प्रभावित हो रही है। ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत शुरू किए पाठ्यक्रमों की पढ़ाई कैसे हो पाएगी। यह विचारणीय प्रश्न है।

उधर राज्य शासन द्वारा राजगढ़ के शासकीय व्यावसायिक महाविद्यालय प्रारंभ करने की स्वीकृति प्रदान करते हुए 30 शैक्षणिक और 43 गैर-शैक्षणिक पदों के सृजन की स्वीकृति प्रदान की है। गैर शैक्षणिक पदों में 29 पद महाविद्यालय और 14 पद छात्रावास के लिए स्वीकृत किए गए हैं। यहां पर सालों से पद खाली होने के कारण शिक्षण व्यवस्था प्रभावित हो रही है। उच्च शिक्षा विभाग ने जारी आदेश में शैक्षणिक पदों में प्राचार्य (स्नातक स्तर) का एक, सहायक प्राध्यापक (हिंदी) और सहायक प्राध्यापक (अंग्रेजी) के दो-दो, सहायक प्राध्यापक (कम्प्यूटर एप्लीकेशन) के पांच, सहायक प्राध्यापक (रिन्यूएबल एनर्जी), सहायक प्राध्यापक (गणित), सहायक प्राध्यापक (फैशन डिजाइन), सहायक प्राध्यापक (फूड साइंस एवं टेक्नोलाजी), सहायक प्राध्यापक (इंटीरियर डिजाइन) और सहायक प्राध्यापक (बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन) के तीन-तीन और क्रीड़ा अधिकारी एवं ग्रंथपाल का एक-एक पद स्वीकृत किया है। गैर-शैक्षणिक पद में मुख्य लिपिक एवं लेखापाल का एक-एक, सहायक वर्ग-2 एवं सहायक वर्ग-3 के दो-दो, प्रयोगशाला तकनीशियन, प्रयोगशाला परिचारक एवं बुक लिफ्टर के पांच-पांच, भृत्य के दो और स्वीपर एवं चौकीदार के तीन-तीन पद स्वीकृत किए गए हैं। इसी प्रकार छात्रावास के लिए गैर-शैक्षणिक पदों में हास्टल मैनेजर के दो (एक कन्या एवं एक पुरूष छात्रावास के लिए) और भृत्य के दो (एक कन्या एवं एक पुरूष छात्रावास के लिए), स्वीपर के चार (दो कन्या एवं दो पुरुष छात्रावास के लिए) और चौकीदार के छह पद (तीन कन्या एवं तीन पुरुष छात्रावास के लिए) स्वीकृत किए गए हैं।

बता दें, कि प्रदेश के कालेजों में 12 हजार 87 शिक्षकों के पद स्वीकृत हैं, जबकि 6,941 पद भरे हैं और 5146 पद खाली है। ऐसे में मार्च में उच्च शिक्षा मंत्री ने 1500 पद इस सत्र में भरने के आदेश दिए थे। कई सरकारी कालेजों में अतिथि विद्वानों के भरोसे

भारतीय महिलाओं ने पाकिस्तान को 8 विकेट से रौंदा, मंधाना ने खेली 63 रनों की तूफानी पारी

बर्मिंघम। कॉमनवेल्थ गेम्स 2022 में भारतीय महिला टीम ने रविवार को अपनी चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 8 विकेट से हरा दिया। पाकिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। ऐसे में भारतीय गेंदबाजों ने पाकिस्तान को 99 रन पर ऑलआउट कर दिया। इस दौरान पाकिस्तान की मुनीबा अली ने 32 रनों की सर्वाधिक पारी खेली। उनके अलावा आलिया रियाज ने 18 और कप्तान बिस्माह मरूफ ने 17 रन का योगदान दिया।

मंधाना ने जड़ा अर्धशतक-स्मृति मंधाना ने तूफानी पारी खेलते हुए पाकिस्तान की रणनीति पर पानी फेर दिया और चारों दिशाओं में आक्रामक शॉट खेले। स्मृति मंधाना ने 42 गेंद में 63 रनों की नाबाद पारी खेली। इस दौरान उन्होंने 150 के औसत से रन बनाए। जिसमें 8 चौके और 3 छक्के शामिल हैं।

स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा के बीच पहले विकेट के लिए 61 रन की पार्टनरशिप हुई। उसके बाद सबभिनेनी मेघना ने तीन नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए स्मृति मंधाना का बखूबी साथ दिया। हालांकि सबभिनेनी मेघना 14 रन बनाकर पवेलियन लौट गईं।

भारतीय गेंदबाज चमके-भारतीय गेंदबाजों के सामने पाकिस्तानी खिलाड़ी टिक नहीं पाए और टीम ताश के पत्तों की तरह ढह गई। स्नेह राणा ने चार ओवर में 15 रन और राधा यादव ने तीन ओवर में 18 रन देकर 2-2 विकेट चटकाए। जबकि रेणुका सिंह ने अपना स्वप्निल स्पैल डाला, उन्होंने मेडन ओवर से शुरूआत की जो क्रिकेट के सबसे छोटे प्रारूप में दुर्लभ होता है। रेणुका सिंह, मेघना सिंह और शेफाली वर्मा ने एक-एक झटका।

लोगों को संवैधानिक प्रावधानों के बारे में सरल शब्दों में समझाएं-प्रधान न्यायाधीश रमण

रायपुर। प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) एन वी रमण ने कहा कि कोई संवैधानिक गणतंत्र तभी आगे बढ़ सकता है, जब उसके नागरिक इस बात से अवगत हों कि उनके संविधान में क्या परिकल्पना की गई है। न्यायमूर्ति रमण ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। कानून की पढ़ाई करने वाले स्नातकों का प्रयास होना चाहिए कि वे लोगों को संवैधानिक प्रावधानों को सरल शब्दों में समझाएं। उन्होंने हिदायतुल्ला राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय (एचएनएलयू), रायपुर के पांचवें दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कानून को सामाजिक परिवर्तन का एक साधन बताया और कहा कि विधि स्कूली शिक्षा को स्नातकों को सामाजिक इंजीनियरों में बदलना चाहिए।

प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि युवाओं की यह पीढ़ी दुनिया को क्रांति की ओर ले जा रही है। चाहे जलवायु संकट हो या मानवाधिकारों का उल्लंघन वे दुनिया भर में एक एकजुट ताकत हैं। वास्तव में, तकनीकी क्रांति ने हम में से प्रत्येक को वैश्विक नागरिक बना दिया है। यह हम सभी के लिए क्रांति में शामिल होने का समय है।

उन्होंने कानून और संविधान के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाने में युवाओं की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा, दुखद वास्तविकता यह है कि आधुनिक स्वतंत्र भारत की आकांक्षाओं को परिभाषित करने वाला सर्वोच्च दस्तावेज़ कानून के छात्रों, वकीलों और भारतीय आबादी के एक बहुत छोटे हिस्से के ज्ञान तक ही सीमित है। न्यायमूर्ति रमण ने कहा, एक संवैधानिक

गणतंत्र तभी आगे बढ़ेगा, जब उसके नागरिक इस बात से अवगत होंगे कि उनके संविधान में क्या परिकल्पना की गई है। उन्होंने कहा कि युवा अपनी कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता के माध्यम से वकालत के पेशे में नए मुकाम हासिल कर रहे हैं।

इस बीच, मुख्य न्यायाधीश ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को भी बधाई देते हुए कहा कि उन्होंने सुना है कि उनकी सरकार राज्य में न्यायिक समुदाय की ढांचागत और बजटीय जरूरतों का पर्याप्त ध्यान रख रही है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह प्रवृत्ति जारी रहेगी और छत्तीसगढ़ न्यायपालिका को सर्वोत्तम बुनियादी ढांचा प्रदान करने के मामले में एक आदर्श के रूप में उभरेगा। राज्य के मुख्यमंत्री इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि आये थे।

उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश एस अब्दुल नज़ीर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश अरूप कुमार गोस्वामी भी उपस्थित थे। एचएनएलयू के जनसंपर्क अधिकारी के अनुसार, बी.ए. एल.एल.बी (ऑनर्स) (2015-2020 का बैच) से 60 छात्र, बी.ए. एल.एल.बी (ऑनर्स) (2016-2021) से 147, एल.एल.एम (2019-2020) से 49 और एल.एल.एम (2020-2021) से 61 छात्रों समेत पीएचडी के चार छात्रों को डिग्री प्रदान की गयी।

कलेक्टर की अध्यक्षता में हुई केन्द्रीय विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक

बड़वानी। केन्द्रीय विद्यालय बड़वानी में कलेक्टर श्री शिवराजसिंह वर्मा की अध्यक्षता में विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक के दौरान कलेक्टर श्री शिवराजसिंह वर्मा द्वारा विद्यालय की छात्रा शताक्षी गुप्ता द्वारा बोर्ड परीक्षा 2021 में केन्द्रीय विद्यालय संगठन की मेरिट लिस्ट में स्थान हासिल करने के कारण मेरिट सर्टिफिकेट और 10 हजार रुपए की राशि से पुरस्कृत किया गया।

स्वस्थ रहने के लिए जरूर लगवाएं सतर्कता की डोज

इंदौर। एक बार फिर कोरोना संक्रमण के मामले बढ़ने लगे हैं। शहर में बीते दिनों में संक्रमितों की संख्या 150 का आंकड़ा भी पार कर चुकी है और विगत दिनों संक्रमण के चलते मौत भी हुई। संक्रमण से बचाव के लिए जितना जरूरी मास्क और सैनिटाइजर का उपयोग है उतना ही आवश्यक टीकाकरण भी है। सतर्कता की डोज लगवाकर संक्रमण के दुष्प्रभाव से काफी हद तक बचा जा सकता है।

श्वसन तंत्र विशेषज्ञ डा. सलील भार्गव के अनुसार कोरोना संक्रमण के दुष्प्रभाव से बचने के लिए टीकाकरण एक बेहतर विकल्प है। फिर चाहे बात बड़ों की हो या बच्चों की सभी के लिए कोरोनारोधी टीका लगवाना एक बेहतर

विकल्प है। अभी तक ऐसी कोई दवा नहीं आई जिसके सेवन से कोरोना संक्रमण की चपेट में आने से बचा जा सके लेकिन टीकाकरण के माध्यम से कोरोना से होने वाले दुष्प्रभाव से जरूर बचा जा सकता है। टीकाकरण के बाद भी यदि संक्रमण होता है तो शरीर पर इसका दुष्परिणाम अधिक नहीं होता।

टीकाकरण को लेकर आज भी कई लोगों में भ्रांतियां है जिसमें से एक यह है कि सतर्कता की डोज लेने के बाद तेज बुखार आता है या अन्य गंभीर समस्याएं होती है पर यह पूर्ण सत्य नहीं है। जिस तरह अन्य टीके लगने के बाद सामान्य बुखार आता है उसी तरह कोरोनारोधी टीकाकरण के बाद भी सामान्य बुखार ही आता है। यह जरूरी नहीं कि सभी को बुखार आए ना ही अभी तक यह प्रमाणित हुआ कि सतर्कता की डोज के अन्य कोई नकारात्मक प्रभाव शरीर पर दिखे हैं। जहां तक बच्चों के टीकाकरण की बात है तो जिन्हें फ्लू आदि के टीके लगे हुए हैं उन्हें भी यह टीका लगवाना चाहिए।

टीका लगवाने के बाद बड़ों को जो सामान्य तकलीफें हुईं, वही बच्चों को भी हो सकती है या यह भी हो सकता है कि बच्चों को उससे भी कम तकलीफ हो क्योंकि बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बेहतर होती है। यदि कोई किसी रोग से ग्रसित है या उसे कोई टीका हाल ही में लगा है तो कोरोनारोधी टीका लगवाने के लिए उसे चिकित्सकीय परामर्श लेना चाहिए। जिन्हें सर्दी-जुखाम, बुखार है, जिन्हें टीकाकरण से कुछ दिन पहले ही कोई अन्य टीका लगा है, कोई किशोर यदि पहले से किसी गंभीर रोग से ग्रसित है या किसी रोग की दवाई जारी है तो उसे चिकित्सकीय परामर्श के बाद ही यह टीका लगवाना चाहिए। खाली पेट टीका न लगवाएं। यदि कोई दवाई जारी है तो चिकित्सकीय परामर्श से ही टीका लगवाएं। टीकाकरण के बाद यदि कोई समस्या हो तो डाक्टरी सलाह लें।

हम सब संकल्प लें कि विद्युत का उचित उपयोग कर विद्युत बिल में कमी लाएग-मंत्री श्री दत्तीगांव

इंदौर। विद्युत कर्मी कठिन परिस्थिति में भी अपना कार्य करते हैं। उनकी सुरक्षा के इंतजाम के लिए और अधिक प्रयास किए जाएंगे। विद्युत हर जगह बहुत महत्पूर्ण है। अस्पताल, उद्योग, कृषि के लिए हमे सबसे पहले विद्युत की आवश्कता होती है। हम सब संकल्प लें कि विद्युत का उचित उपयोग कर विद्युत बिल में कमी लाएगें। इसका व्यर्थ उपयोग बिलकुल भी नहीं करेंगे। यह बात प्रदेश के औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन मंत्री श्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव ने इंदौर संभाग के धार जिले के बदनावर के चंद्रलीला में आजादी का अमृत महोत्सव के तहत ''उज्जवल भारत, उज्जवल भविष्य पॉवर/ 2047'' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। कार्यक्रम का शुभारंभ मंत्री श्री दत्तीगांव ने मॉ सरस्वती के चित्र के समक्ष माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर किया। उन्होंने कहा कि हमारा प्रदेश सौर उर्जा, पवन ऊर्जा में भी अग्रणी हो रहा है। इससे हमारी उत्पादन क्षमता में भी वृद्धि हो रही है। हम सभी को पर्यावरण का ध्यान रखना है। सभी अधिक से अधिक पौधा रोपण करें जिससे आने वाली पीढ़ी को शुद्ध और ताजी हवा मिल सके। उन्होंने बताया कि कुसुम योजना सोलर पर आधारित है इसके लिए 2 मेगा वॉट तक का प्लांट लगा सकते है। इसके बारे में उन्होंने विस्तार से जानकारी दी।

उपाध्यक्ष नागरिक आपूर्ति निगम श्री राजेश अग्रवाल ने कहा कि जीवन में हवा, पानी की तरह बिजली भी बहुत आवश्यक है। अब छोटे-छोटे मजरो, टोला तक बिजली की उपलब्धता हो रही है। हमारा देश अब तेजी से आगे बढ रहा है। इस अवसर पर पूर्व विधायक श्री खेमराज पाटीदार ने कहा कि विद्युत की क्रांति में मध्यप्रदेश का नाम आगे आ रहा है। यहॉ हर क्षेत्र में विद्युत की उपलब्धता हो रही है। शासन की मंशा है कि सभी को 24 घंटे विद्युत मिल सके।

इस अवसर पर बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम व नुक्कड नाटक की प्रस्तुती दी गई। कार्यक्रम में जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमती आशा सोलंकी, एसडीएम विरेन्द्र कटारे, अधीक्षण यंत्री जेआर कनखरे, जनप्रतिनिधि, विभागीय अधिकारी, कर्मचारी सहित आम नागरिक मौजूद रहें।

इंदौर में जून के मुकाबले जुलाई में दोगुनी रही संक्रमण दर, चार गुना मौत हुई

इंदौर। कोरोना संक्रमण एक बार फिर तेजी से बढ़ने लगा है। जून के मुकाबले जुलाई में इसकी रफ्तार दोगुनी से भी ज्यादा रही। जून में जहां सिर्फ 645 संक्रमित मिले थे वहीं जुलाई में यह संख्या लगभग चार गुना बढ़कर 2531 पर पहुंच गई। सिर्फ संक्रमण ही नहीं बढ़ा इसकी गंभीरता भी बढ़ गई है। जून में सिर्फ एक कोरोना संक्रमित की मौत हुई थी जबकि जुलाई में चार कोरोना संक्रमितों ने दम तोड़ा है। ये चारों पहले ही से गंभीर बीमारियों से जूझ रहे थे। यानी जो लोग पुरानी गंभीर बीमारियों से पीड़ित हैं उन्हें कोरोना आसानी से अपना शिकार बना रहा है।

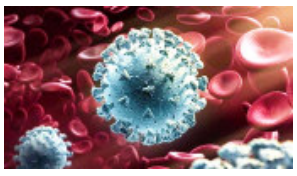

औसतन 600 नमूने रोज जांचे-जुलाई के माह में इंदौर में 18692 नमूनों की जांच की गई। इनमें से 2531 में संक्रमण की पुष्टि हुई। संक्रमण दर 13.54 प्रतिशत रही। यानी जांचा जाने वाला हर सातवां नमूना संक्रमित मिला है। राहत की बात यह है कि जुलाई में कोरोना संक्रमितों के ठीक होने की दर जून के मुकाबले बेहतर रही। जून में जहां यह 73 प्रतिशत के आसपास थी वहीं जुलाई में यह बढ़कर 85 के करीब पहुंच गई। जुलाई में औसतन 600 नमूनें रोजाना जांचे गए।

चार मौत हुई, पुरानी बीमारी से जूझ रहे थे-जून में सिर्फ एक कोरोना संक्रमित की मौत हुई थी जबकि जुलाई में चार। चिंता की बात यह भी है कि चारों कोरोना संक्रमित लंबे समय से किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित थे। इलाज के दौरान जब उनकी कोरोना जांच करवाई गई तो पता चला कि वे कोविड-19 की चपेट में आ चुके हैं। डाक्टरों का मानना है कि जिन लोगों को कोई पुरानी गंभीर बीमारी है उनके कोरोना संक्रमण की चपेट में आने की आशंका अन्य के मुकाबले ज्यादा रहती है क्योंकि पुरानी बीमारी की वजह से ऐसे लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता स्वस्थ्य लोगों के मुकाबले बहुत कम हो जाती है।

पूरे सम्मान और गरिमा के साथ फहराए राष्ट्रीय ध्वज- मंत्री सुश्री ठाकुर

इंदौर। संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री सुश्री उषा ठाकुर ने कहा है कि 'हर घर तिरंगा' अभियान के जरिए प्रदेशवासी राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सार्वभौमिक स्नेह और सम्मान प्रदर्शित करेगा। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज भारत के लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह देशवासियों की भावनाओं और मानस में एक अद्वितीय और विशेष स्थान रखता है। भारत की ध्वज संहिता का पालन करते हुए हम सभी को राष्ट्रीय ध्वज को पूरी गरिमा और सम्मान के साथ फहराना चाहिए।

भारत की ध्वज संहिता की प्रमुख विशेषताएँ-भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का फहराना, उपयोग और प्रदर्शन राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम, 1971 और भारत की ध्वज संहिता 2002 द्वारा शासित है। राष्ट्रीय ध्वज हाथ से बुना या मशीन से निर्मित भी हो सकता है। इसमें कपास, ऊन, रेशमी खादी और पॉलिएस्टर का उपयोग किया जा सकता है। आम लोग, निजी संगठन और संस्थान अब 24 घंटे अर्थात दिन और रात तिरंगा फहरा सकते हैं।

राष्ट्रीय ध्वज की गरिमा और सम्मान के अनुरूप सभी दिनों और अवसरों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जा सकता है। राष्ट्रीय ध्वज आयताकार होगा, झंडा किसी भी आकार का हो सकता है लेकिन झंडे की लंबाई और ऊंचाई (चौड़ाई) का अनुपात 3:2 होगा। क्षतिग्रस्त या अस्त-व्यस्त झंडा प्रदर्शित नहीं किया जा सकता। किसी अन्य ध्वज या झंडों के साथ एक ही मास्टहेड से राष्ट्रीय ध्वज नहीं फहराया जाना चाहिए।

इंदौर जिले के चार गांवों में भूकंप के हल्के झटके, लोग डरे

इंदौर। इंदौर जिले के राऊ क्षेत्र के माचला, महू तहसील के नावदा, हरनियाखेड़ी और बोरखेड़ी में शनिवार सुबह करीब 6.30 बजे भूकंप के हल्के झटके महसूस किए गए। कुछ घरों में बर्तन हिले और लोगों ने कंपन महसूस किया। माचला में एक किसान भैंस का दूध दुह रहा था, तो उसने भी दूध की बाल्टी में कंपन महसूस किया। इसके बाद दिनभर इंटरनेट मीडिया पर इस भूगर्भीय घटना की चर्चा चलने लगी।

भोपाल स्थित मौसम केंद्र के मौसम विज्ञानी वेद प्रकाश सिंह के मुताबिक महू के बोरखेड़ी क्षेत्र में कंपन का केंद्र बताया जा रहा है। इसका हाइपोसेंटर 10 किलोमीटर गहराई पर था। कंपन की तीव्रता 2.9 दर्ज हुई जो ज्यादा चिंताजनक नहीं है। यह हलचल नर्मदा के उत्तरी हिस्से में दर्ज की गई और

तीन से चार किलोमीटर क्षेत्र में महसूस की गई है। यह क्षेत्र भूकंप के हिसाब से कम जोखिम क्षेत्र में आता है।

जहां कंपन महसूस किया गया उस क्षेत्र में कठोर चट्टानें हैं और वो क्षेत्र पीथमपुर के समीप है। ऐसे में यह संभावना जताई जा रही है कि किसी औद्योगिक इकाई के निर्माण के लिए जमीन के निचले हिस्से में ब्लास्ट किया गया। जिसके कारण यह कंपन महसूस किया गया। यही वजह है कि हमने अगले दो दिन पीथमपुर क्षेत्र में औद्योगिक गतिविधियां बंद करवाने के निर्देश दिए हैं ताकि कंपन का वास्तविक कारण पता किया जा सके।

सरकारी अमला भी पहुंचा-कंपन की सूचना मिलने पर तहसील, राजस्व निरीक्षक और पटवारियों की टीम अलग-अलग जगह पहुंची और पंचनामा बनाया। माचला में पटवारी मुकुल हरदेनिया और राजस्व निरीक्षक रवींद्र मंडलोई ने निरीक्षण कर रिपोर्ट तैयार की। क्षेत्र की तहसीलदार सरोज परिहार ने बताया कि लोगों ने केवल कंपन महसूस किया। कहीं से किसी जन या धन हानि की सूचना नहीं है। अपर कलेक्टर पवन जैन ने बताया कि लोगों ने कंपन तो महसूस किया, लेकिन इसकी तीव्रता बहुत कम थी। किसी ब्लास्टिंग के कारण भी ऐसा हो सकता है। गांवों से सूचना मिलने पर हमारे आरआइ और पटवारियों ने मुआयना किया है।

Raksha Bandhan

Raksha Bandhan is a famous festival in the Hindu religion which is also called the festival of rakhi. This festival is celebrated in every corner of India. Raksha means protection and Bandhan means tied. Thus Rakshabandhan means the bond of protection. It is the festival of brother and sister. On this day people get up early and wear new clothes. Sisters put rakhi, sweets, Diya and turmeric on the plate. Brothers bring their sister's favorite things as gifts to give them in return. They both sit at one place to perform rituals. Sisters tie colorful sacred threads and feed sweets to their brothers with their hands with love.

Raksha Bandhan is the festival of brother and sister. It is celebrated on the full moon day of Sawan month. On this day sisters tie rakhi on the wrists of their brothers and pray for their long life. The brothers also promise to protect them. Raksha Bandhan means the bond of protection.

Rakhi can be made from threads ranging from cotton to expensive metals like gold. On this day the names of Rama and Sita are written outside the houses. Many types of dishes are prepared in homes on this day. On this day people also tie a thread of protection on the trees.

Raksha Bandhan is one of the major festivals in Hindu society, celebrated with great enthusiasm in every part of India by the people of the Hindu religion. This festival is celebrated on the full moon day of Shravan month. Raksha Bandhan is a symbol of the sacred love of brother and sister.

On this day all sisters tie rakhi on the wrist of their brothers. Sister decorates the puja plate with kumkum, Diya, rice, sweets and rakhi. She applies tilak on the foreheads of her brothers and ties rakhi on their wrists. She feeds sweets to the brothers and wishes them good luck.

Brothers also give gifts to their sisters and promise to protect them. All exchange sweets among their friends, family and relatives. In today's hectic life, everyone is busy with their work. The festival of Raksha Bandhan frees us from this busyness and allows us to meet our relatives.

Raksha Bandhan is a holy festival celebrated in India. Although it is a festival of Hindus, people of all religions and sects have started celebrating it, attracted by the simplicity, purity and its original building. Rakshabandhan is the festival of brother and sister.

Unique in itself, this festival is celebrated only by Indians all over the world. This festival shows our association with India's civilization, culture and values ??and ideals. Rakshabandhan is a symbol of the sacred love of brother and sister.

On this day, brothers and sisters take a bath, wear clean clothes, and offer prayers and other family members. The elders of the family pray to God to maintain the prosperity of the house. After that sisters perform aarti of their brothers, apply tilak to them and tie rakhi on their wrists.

In return also give some gifts to the sister. In fact, by tying the thread of protection, sisters also pray for health and protection and wish for her long life and brothers also make a promise to protect the honor and happiness of sisters.

The love of brother and sister is so pure that it does not require any kind of deceit, show or show. This is the reason why Raksha Bandhan is a festival celebrated with utmost simplicity. No noise of any kind is found in this festival, but a fragrance prevails in the atmosphere. Seeing the Rakhi tied on the wrist of every brother walking on the path fills the mind with holy feelings.

This sweet smell of relationships infuses our lives. While the thread of brother-sister love helps keep the whole family together, Rakshabandhan strengthens the family and social brotherhood. We do not know any exact date since when this festival is being celebrated in our country, but it is said that Queen Karnavati of Chittor sent a Rakhi to Humayun, the emperor of Delhi, to protect her kingdom and her honor.

So and Humayun went to protect them. It is known from this story that the tradition of Rakshabandhan must have been there even then and also the importance of Rakhi.

Rakhi shops are set up in the markets only a month ago. Apart from Rakhi cards, there are different types of gifts to be seen. Spoken brothers and mouth-spoken sisters are also do not work in our country.

Those who did not have their own brothers or sisters, celebrate the festival of Rakshabandhan by making someone else a sister or brother. The sacred threads of Rakhi give birth to new relationships, and those relationships are those that never break.

Rakshabandhan is the main festival of Hindus. This festival is a symbol of the sacred love of brother and sister. On this day sisters tie rakhi on the wrists of their brothers and pray for their brother's long life. He also promises his sister to protect him. This Rakhi festival is celebrated all over India.

We have been celebrating this festival for centuries. Nowadays, on this day sisters bring Rakhi and sweets to their brothers' house. After tying the rakhi, brothers give gifts or Dakshina to their sisters. In this way, the love between brother and sister is strengthened by sharing.

In 1535, when the queen of Mewar, Karnavati was attacked by Bahadur Shah, she sent a Rakhi to the Mughal emperor Humayun asking for help to protect her kingdom. Rani Karnavati herself was a heroic warrior, so she herself entered the battlefield. On this day everyone wears new clothes. Everyone's heart is filled with joy and happiness. Sisters buy rakhis etc. for their brothers, brothers also buy some wonderful gifts for their sisters.

In our Hindu society, those people do not celebrate this festival, from whose family a man - brother, father, son, uncle, tau, nephew is killed on the day of Rakshabandhan. Due to the death of a man at this pious festival, this festival becomes tainted. Then this festival is celebrated again when someone in the family or family gets a son on the same day as Rakshabandhan.

There are many such traditions in our Hindu society, which have been going on for centuries. Society still accepts them. These traditions are also called our culture. But we have removed many traditions, such as child marriage, male sacrifice, Sati, etc., from our lives by considering it as evil; But the beneficial traditions, we are following even today. Therefore, the festival of Rakshabandhan is such a tradition that connects us, so even today it is celebrated with all pomp and gaiety.

Raksha Bandhan is a great and holy festival of our country. Hindus celebrate it with great reverence. This festival is celebrated every year on the full moon day of Shravan month with great enthusiasm all over the country. This festival is known by many names across the nation.

Mostly it is known by names like Shravani, Rakhi and Saloon etc. Symbolizing the sacred affection of brother and sister, this festival is great in itself. On this day all sisters tie rakhi to their brothers by tilak on their wrists. Brothers also give money and other types of gifts according to their ability in exchange for tying Rakhi to their sisters.

On this day, sisters wish their brothers a successful life and also take a vow to protect their sisters. Various types of dishes are prepared in homes on this day. All the children, men and women wear new clothes. On this day religious people take bath in the rivers, after that they perform Yagya and wear a new Yagyopaveet.

This festival also has a historical significance of its own. It is said that when Sultan Bahadur Shah had besieged Chittorgarh from all sides, then Queen Karmavati of Chittor sent a rakhi to Humayun for her protection.

Then Humayun, who was tied in the bond of Rakhi, forgetting his hatred and went to protect the queen. In this way, this festival, which gives the message of love, sacrifice and purity, is completed with great gaiety.

Thus, this festival gives the message of love, dedication and purity are celebrated with joy.

When is Indian Independence Day?

Indian Independence Day is always celebrated on August 15th. It is the National Day of India.

Also known as 'I-Day', this public holiday marks the date in 1947 when India became an independent country.

This holiday is a dry day in India when the sale of alcohol is not permitted.

History of Indian Independence Day

The British established their first outpost on the Indian Subcontinent in 1619 at Surat on the northwestern coast.

By the end of that century, the East India Company had opened three more permanent trading stations at Madras, Bombay, and Calcutta.

The British continued to expand their influence in the region until, by the mid-nineteenth century, they had control over most of what is present-day India, Pakistan, and Bangladesh. In 1857, a rebellion in northern India by mutinous Indian soldiers led the British Government to transfer all political power from the East India Company to the Crown. The British began controlling most of India directly while administering the rest through treaties with local rulers.

In the late Nineteenth Century, the initial moves were taken toward self-government in British India by the appointment of Indian councillors to advise the British viceroy and the establishment of provincial councils with Indian members.

In 1920, Indian leader Mohandas K. Gandhi transformed the Indian National Congress political party into a mass movement to campaign against British colonial rule. The party used both parliamentary and nonviolent resistance and non-cooperation to achieve independence. Other leaders, notably Subhash Chandra Bose, also adopted a military approach to the movement. The movement culminated in the independence of the subcontinent from the British Empire and the formation of India and Pakistan.

Thus, on August 15th 1947, India became a dominion within the Commonwealth. Friction between Hindus and Muslims led the British to partition British India, creating East and West Pakistan. India became a republic within the Commonwealth after promulgating its constitution on 26 January 1950, which is now the Republic Day holiday.

On this day, the Prime Minister of India will hoist the tricolour at Red Fort before addressing the nation from the ramparts. On Independence Day, the flag is hoisted, which is to say it is kept folded somewhere in the middle of the flag pole and is pulled up to the top and unfurled.

The other public holiday in India is January 26th, India's Republic Day. On this day, the President of India unfurls the flag on Rajpath before presiding over a parade that showcases India's military might and cultural diversity. On this day, the tricolour isn't hoisted, it is merely unfurled. It is folded up and rests on top of the flag pole, unlike on August 15th, when it is in the middle before being unfurled.

This is a minor difference between the two ceremonies but the significance is great. The hoisting of the flag signifies the rise of a new nation, free from colonial domination. Whereas on Republic Day, the flag is already on top of the flag pole and signifies that it is one of a free nation.

The Indian national flag is a horizontal tricolour of saffron, white and green. The wheel in the centre is a representation of the chakra, which appears on the abacus of Ashoka's pillar.

The flag was approved on July 22nd 1947 and presented to the Indian nation on August 15th 1947 when Jawaharlal Nehru, the first Prime Minister of India, raised the flag at Lahore Gate of the Red Fort in Delhi.

The colour saffron, represents courage, sacrifice and renunciation. The white denotes truth and purity and the green stands for life, faith and chivalry. The wheel symbolises unceasing motion and progress.

Why snakes are fed milk on the day of Nag Panchami

The month of Sawan is very dear to Lord Shiva. Many festivals are celebrated in this month. One of those festivals is also Nag Panchami. It is celebrated every year on the fifth day of Shukla Paksha of Sawan month. On this day there is a law to offer milk to the snake deity. It is said that by feeding milk and lava to snakes on this day, one gets freedom from Nag Dosha and the special grace of Nag Devta remains on the house and family members. According to the beliefs, worshiping serpents leads to attainment of renewable virtues. If you also give milk to snakes on the day of Nag Panchami, then definitely know the reason behind it.

Also read: Amrit Festival of Independence: Dr. Bidhan Chandra Roy, who was awarded the Bharat Ratna, had joined the movement inspired by Lal-Bal-Pal

Devotees offer milk, lava and flowers to snakes on the day of Nag Panchami to seek their blessings. In ancient times it was believed that snakes have the power to speak. In the Mahakaleshwar temple of Ujjain, devotees come early in the morning to offer milk to the snake deity. It is said in Hinduism that by offering milk to snakes on this day, Kalsarp Dosh ends in the horoscope.

According to astrology, Kaal Sarp Dosh is an inauspicious yoga caused by the shadow planets Rahu and Ketu in the horoscope. According to astrology, such people do not get the right results despite their efforts. Despite their efforts in life, they only get disappointment.

Young girls also offer milk to Nag Devta on that day and pray to them for their desired groom. According to the old belief it is said, snakes have a photographic memory in their eyes. He remembers someone's face very well. That's why people pray for the protection of family members by worshiping them on the day of Nag Panchami. It is said that by feeding milk to the deity of Nag Panchami, one gets freedom from snake bites. According to religious beliefs, Lord Shiva is very pleased by worshiping the Nag Devta on the day of Nag Panchami. On this day many types of religious events are organized in some places. According to religious beliefs, giving milk to snakes does not bring any kind of calamity on the members of the family and gives success in every work.

Also read: Weekly Horoscope: The coming week will be very auspicious for these zodiac signs, these zodiac signs need to be careful

Religious story related to Nag Panchami

According to the legend, a snake named Kalinga lived in the Yamuna river. Due to which it became impossible for the residents of Braj to consume the water of Yamuna. Since the river had become poisonous and contaminated, Lord Shri Krishna injured the snake and forced it to withdraw the poison spread from the Yamuna. Following the orders of Lord Shri Krishna, he withdrew all the poison from the Yamuna. Then Lord Krishna blessed him and said that the devotee who worships the snake by offering milk to him on the day of Nag Panchami will be free from all sins and troubles.

इस वर्ष अपने दिन पूरे करने की जल्दी में है पृथ्वी?

24 घंटे से भी कम समय में लगा रही चक्कर, जानें क्या होगा परिणाम

नई दिल्ली। पृथ्वी इस वर्ष अपने दिन पूरे करने की जल्दी में है। सामान्य गति से घूमने वाली पृथ्वी अब तेज गति से घूमने लगी है। ऐसे में क्या अब पृथ्वी 24 घंटे से भी कम समय में अपना चक्कर पूरा कर ले रही है। ये सवाल इसलिए भी चर्चा में है क्योंकि 29 जून को रिकॉर्ड किए गए इतिहास में सबसे छोटा दिन पाया गया है। पृथ्वी ने इस वर्ष 29 जून को 24 घंटे से भी कम समय में 1.59 मिलीसेकंड में अपना चक्कर पूरा किया, जो एवरेज स्पीड से ज्यादा है। परमाणु घड़ी द्वारा मिनट परिवर्तन का पता लगाया गया था जिसका उपयोग ग्रह की घूर्णी गति को न्यूनतम विवरण तक मापने के लिए किया जाता है।

इससे पहले साल 2020 में पृथ्वी की तेज गति के चलते जुलाई का महीना सबसे छोटा देखा गया था। उस वर्ष के 19 जुलाई को सबसे छोटा दिन 1.47 मिलीसेकंड था, जो 24 घंटे से भी कम था। यानी इस दिन पृथ्वी ने अपना चक्कर 1.47 मिलीसेकंड में पूरा कर लिया था। इस साल 26 जुलाई को धरती 1.50 मिलीसेकंड में पूरी घूम गई।

पृथ्वी का घूर्णन छोटा क्यों हो रहा है?

पृथ्वी की घूर्णन प्रकृति की प्रमुख शक्तियों से प्रभावित होती है, जिसमें कोर

की इनर और आउटर लेयर, महासागरों, टाइड या फिर जलवायु में लगातार हो रहे परिवर्तन के कारण हो रहे हैं। हालांकि वैज्ञानिकों ने अभी तक पृथ्वी की घूर्णन गति में गिरावट के कारणों का पता नहीं लगाया है, लेकिन इसके लिए चांडलर वॉबल को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। ये पृथ्वी के घूमने की धुरी में एक छोटा सा डेविएशन है। अगर पृथ्वी इसी बढ़ती हुई गति से घूमती रही, तो ये नेगेटिव लीप सेंकेड की शुरुआत कर सकती है। इसका मतलब है कि पृथ्वी को उस दर को बनाए रखना होगा, जिसके मुताबिक पृथ्वी अटोमिक घड़ियों के समान सूर्य की परिक्रमा करती है। नासा के अनुसार, चांडलर वॉबल, पृथ्वी द्वारा प्रदर्शित एक गति है क्योंकि यह अपनी धुरी पर घूमती है। 2000 में वैज्ञानिकों ने इस रहस्य को सुलझाया और कहा कि चांडलर डगमगाने का मुख्य कारण समुद्र के तल पर दबाव में उतार-चढ़ाव है, जो तापमान और लवणता में परिवर्तन और महासागरों के संचलन में हवा से चलने वाले परिवर्तनों के कारण होता है।

अब आगे क्या?

वैज्ञानिक अभी तक पूरी तरह से उन प्रभावों को नहीं समझ पाए हैं जो एक सदी में संकलित होने पर इस मिनट के बदलाव का असर होगा। हालांकि, वैज्ञानिकों डॉ. जोतोव का कहना है कि 70 प्रतिशत संभावना है कि हम न्यूनतम स्तर पर हैं। इससे और छोटे दिन होने की संभावना बेहद कम है। नेगेटिव सेकंड लीप संभावित रूप से आईटी सिस्टम के लिए कई तरह की समस्याएं पैदा करेगा. मेटा ने हाल ही में एक ब्लॉग पब्लिश किया है, जिसमें कहा गया है कि सेकंड लीप वैज्ञानिकों और खगोलविदों को फायदा पहुंचाएगी. लेकिन यह एक खतरनाक अभ्यास है, जो काफी ज्यादा नुकसान पहुंचा सकता है। मेटा द्वारा प्रकाशित एक ब्लॉग के अनुसार लीप सेकंड 'खास करके वैज्ञानिकों और खगोलविदों को लाभ दे सकता है' लेकिन, यह एक 'जोखिम भरा तरीका है जो अच्छे से ज्यादा नुकसान करता है।' यह इसलिए कि घड़ी 00:00:00 . पर रीसेट होने से पहले 23:59:59 से 23:59:60 तक बढ़ती है। इस तरह के टाइम जंप से प्रोग्राम क्रैश हो सकते हैं और डेटा करप्ट हो सकता है।

मुझे मेरे देश से बहुत प्यार है!

गलतफहमी के कारण मेरी फिल्म का बहिष्कार न करें-आमिर खान

मुंबई। आमिर खान 4 साल बाद अपने नए प्रोजेक्ट लाल सिंह चड्ढा के साथ फिल्मों में वापसी कर रहे हैं।

अद्वैत चंदन द्वारा निर्देशित यह फिल्म 11 अगस्त, 2022 को रिलीज होने के लिए पूरी तरह तैयार है। अपनी फिल्म की रिलीज से कुछ दिन पहले आमिर खान ने मीडिया से बातचीत की और लाल सिंह चड्ढा से जुड़ी हर चीज के बारे में बात की। हाल ही में मीडिया से बातचीत के दौरान आमिर खान से रिलीज से पहले फिल्मों के प्रति नफरत पर उनके विचार पूछे गए। जिस पर उन्होंने मीडिया के सामने आपनी राय रखी। आपको बता दें कि पिछले कई दिनों से लाल सिंह चड्ढा फिल्म सोशल मीडिया पर ट्रेंड हो रही हैं। सोशल मीडिया पर फिल्म का बहिष्कार करने की मांग हो रही हैं। लगातार फिल्म के बहिष्कार की मांग को लेकर आइये आपको बताते है कि आमिर खान ने मीडिया से क्या कहा है।

आमिर खान ने कहा कि जब वह सोशल मीडिया पर अपनी फिल्म के लिए निगेटिविटी ट्रेंड होती देखते हैं तो उन्हें काफी आहत होती है। सुपरस्टार आमिर खान ने कहा कि 'हां, मुझे दुख होता है। साथ ही मुझे लगता है कि आखिर लोग ऐसे क्यों कह रहे हैं। उन्होंने कहा लोगों को लगता है कि मैं कोई ऐसा व्यक्ति हूं जिसे इस मुल्क से प्यार नहीं हैं। लेकिन मैं उन्हीं लोगों से कहना चाहता हूं कि वो जैसा सोच रहे हैं, वो सच नहीं है। मुझे प्यार है अपने देश से और यहां के लोगों से। मैं उनसे यही गुजारिश करूंगा कि प्लीज मेरी फिल्म को बायकॉट न करें और थिएटर पर जाकर फिल्म देखें।

लाल सिंह चड्ढा की बात करें तो यह हॉलीवुड फिल्म फॉरेस्ट गंप की आधिकारिक हिंदी रीमेक है, जिसमें टॉम हैंक्स हैं। अद्वैत चंदन के निर्देशन में बनी इस फिल्म में करीना कपूर खान और मोना सिंह भी हैं। यह साउथ एक्टर नागा चैतन्य का बॉलीवुड डेब्यू है। लाल सिंह चड्ढा पहले बैसाखी रिलीज के लिए निर्धारित थे, लेकिन निर्माताओं ने फिल्म की रिलीज की तारीख 11 अगस्त, 2022 तक टाल दी।

तिरंगामय हो मध्यप्रदेश-मुख्यमंत्री श्री चौहान

भोपाल। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि तिरंगा हमारी शान, सम्मान और राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है। मध्यप्रदेश में 'हर घर तिरंगा' अभियान को बहुआयामी स्वरूप दिया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान निवास कार्यालय में 13 से 15 अगस्त तक 'हर घर तिरंगा' अभियान की तैयारियों और वृहद पौधा-रोपण के अंकुर अभियान की प्रगति की समीक्षा कर रहे थे। प्रदेश में 'हर घर तिरंगा' का मुख्य अभियान 13 से 15 अगस्त की तिथियों में केन्द्रित रहेगा। अभियान की विभिन्न गतिविधियाँ 11 से 17 अगस्त तक सतत् रूप से चलेंगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बैठक में वीडियो कॉफ्रेंस से कलेक्टर्स से चर्चा भी की।

मुख्य सचिव श्री इकबाल सिंह बैंस, पुलिस महानिदेशक श्री सुधीर कुमार सक्सेना, अपर मुख्य सचिव गृह डॉ. राजेश राजौरा, अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन श्री विनोद कुमार, प्रमुख सचिव संस्कृति श्री शिवशेखर शुक्ला और प्रमुख सचिव जनसंपर्क श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। प्रमुख सचिव संस्कृति श्री शुक्ला ने प्रजेंटेशन दिया।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव पर 'हर घर तिरंगा' एक अद्भुत अभियान है। यह राष्ट्रभक्ति की भावना को दृढ़ बनाने का प्रकल्प है। यह प्रत्येक मध्यप्रदेशवासी का कार्यक्रम है। जिला कलेक्टर्स 'हर घर तिरंगा' अभियान को सफल बनाने के लिए अपने जिले में तत्काल बैठक करें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि धर्मगुरू, राजनैतिक दलों के कार्यकर्ता, रहवासी संघ के प्रमुख पदाधिकारी, व्यापारी बंधु, एनजीओ एवं अन्य साहित्यिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों के प्रमुख लोगों के साथ बैठक कर ज्यादा से ज्यादा लोगों को अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित किया जाए। सबकी सहभागिता के साथ अभियान के लिए हम जुटेंगे तो अच्छे

परिणाम मिलेंगे। अभियान के लिए आवश्यक वातावरण का निर्माण किया जाए। कलेक्टर्स से कोटवार तक सभी व्यक्ति सहयोग दें।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि विभिन्न भजन मंडलियों और स्थानीय कलाकारों का सहयोग भी लिया जाए। अभियान प्रारंभ होने की तिथि 13 अगस्त के पूर्व नगरों और बस्तियों में प्रभात फेरियाँ भी निकाली जाएँ। हाथ में राष्ट्रध्वज लेकर चलने के कार्य से अन्य नागरिकों को प्रेरणा मिलेगी। सोशल मीडिया पर भी इसके फोटो एवं वीडियो अपलोड कर लोगों को प्रेरित किया जा सकता है। आवश्यक हो तो नगरों में मैराथन, कवि सम्मेलन के कार्यक्रम कर सहभागिता करने वालों को पुरस्कार भी प्रदान किए जाएँ। कारखानों में प्रबंधन को अभियान को सफल बनाने के लिए श्रमिक बंधुओं को जोड़ने का कार्य करना है। विभिन्न व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में कार्य करने वालों, हाथ ठेला चालकों, स्ट्रीट वेण्डर्स, ऑटो रिक्शा चालकों आदि की भागीदारी भी जुटायी जाए। स्व-सहायता समूह की सदस्य महिलाएँ इसमें हिस्सा लें। निर्वाचित पंचायत पदाधिकारी और पार्षद बड़ी संख्या में अभियान में शामिल हो सकते हैं।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रभारी मंत्री, विधायक, सांसद अभियान को सफल बनाने के लिए अपने स्तर पर आहवान और प्रयास करें। व्यवस्थित प्रचार-प्रसार से यह अभियान सफल हो जाएगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने ट्वीटर हेण्डल पर राष्ट्रध्वज लगाने की पहल की है। अन्य ट्वीटर एकाउंट होल्डर अपनी डीपी में तिरंगे को गर्व के साथ दर्शाएँ। आगामी सप्ताह मध्यप्रदेश में अभियान की तैयारियों की पुनः समीक्षा की जाएगी।

प्रदेश में डेढ़ करोड़ से अधिक झण्डों की आपूर्ति होगी-प्रजेंटेशन में बताया गया कि मध्यप्रदेश में कुल 1.52 करोड़ तिरंगे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। स्थानीय स्तर पर 1.2 करोड़ तिरंगे बनाने का कार्य जारी है। तिरंगा बनाने में सेल्फ हेल्प ग्रुप की महिलाएँ भी जुटी हैं। लगभग 50 लाख तिरंगे केंद्र सरकार से मिलेंगे। अब तक 20 लाख तिरंगे केंद्र से मिल गए हैं। स्थानीय स्तर पर भी 63 लाख तिरंगे बन गए हैं। प्रदेश के समस्त जिलों में तिरंगा वितरण के लिए 36 हजार वितरण केन्द्र बनाए गए हैं। प्रचार-प्रसार के लिए केंद्र शासन की harghartiranga.com वेबसाइट पर तिरंगे के साथ फोटो/सेल्फी अपलोड कर पोस्ट कर सकते है और वहाँ से सर्टिफिकेट ले सकते हैं। प्रदेश शासन की सभी वेबसाइट को ओपन करने पर तिरंगा अभियान की जानकारी बैनर के रूप में मिलेगी, इसकी शुरुआत जल्द हो जायेगी। आकाशवाणी और विविध भारती से वतन का राग कार्यक्रम के प्रसारण, रेडियो जिंगल्स, पुस्तिकाओं के उपयोग और नुक्कड़ नाटकों के मंचन के कदम भी उठाए जा रहे हैं। कलेक्टर बुरहानपुर ने एक लघु फिल्म से जिला स्तर पर 'हर घर तिरंगा' अभियान से ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ने की पहल की है। बैठक में इस लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया। कलेक्टर मंदसौर ने बताया कि सामाजिक क्षेत्र के प्रमुख लोगों को दायित्व दिया गया है कि वे तिरंगा, जो अल्प राशि पर उपलब्ध होगा, उसे खरीदने की पहल करें। इस प्रचार से सामान्य-जन अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित होंगे।

पेड़ लगाना धरती बचाने का अभियान है-मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सभी जिलों में पौध-रोपण महाअभियान सफल बनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि हरियाली महोत्सव और अंकुर अभियान के कार्य निरंतर चलना है। हाल ही में मुख्य सचिव ने इन कार्यों की समीक्षा की है। जिन जिलों की प्रगति धीमी है, उन्हें अपने प्रयास बढ़ाना है। पेड़ लगाना धरती बचाने का अभियान है। कलेक्टर भी अपने जन्म-दिन पर पेड़ जरूर लगाएँ। अधिक से अधिक बच्चों को पौध-रोपण से जोड़ा जाए। जन-अभियान परिषद और अन्य संस्थाओं को जोड़कर कार्य को सफल बनाएँ। पौध-रोपण का कार्य रस्मी नहीं होना चाहिए।

बिजली कंपनियों के घाटे के लिए मुफ्त की रेवड़ियां जिम्मेदार सब्सिडी कल्चर पर फिर भड़के पीएम मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिजली वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) के बढ़ते बकाया को एक आसन्न संकट के रूप में चिह्नित करते हुए 'वोट के लिए रेवड़ियां' संस्कृति के अपने विरोध को और तेज कर दिया। वितरण क्षेत्र के सुधारों और एनटीपीसी की अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए 3 लाख करोड़ रुपये के पैकेज की शुरुआत करते हुए उन्होंने बताया कि डिस्कॉम का उत्पादन कंपनियों पर 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक का बकाया है, क्योंकि उन्हें सब्सिडी नहीं मिली है। वहीं, सरकारी विभागों और स्थानीय निकाय के बिजली बिल का भी भुगतान नहीं हो रहा है। उन्होंने कहा कि भारत का बिजली क्षेत्र का घाटा दोहरे अंकों में है जबकि विकसित देश इसे एकल अंक में रखने में कामयाब रहे हैं। वितरण क्षेत्र के सुधारों के लिए एक पैकेज और नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड की अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं को लॉन्च करते हुए उन्होंने कहा, 'इसका मतलब है कि हम बहुत अधिक बिजली बर्बाद कर रहे हैं और इसके कारण हमें अपनी जरूरत से ज्यादा उत्पादन करना पड़ रहा है। उन्होंने राजनीति में रेवड़ी बांटने की संस्कृति (सब्सिडी कल्चर) के खिलाफ भी खूब

सुनाया। वह इस महीने दूसरी बार इसके खिलाफ बोल रहे थे। इससे पहले उन्होंने 16 जुलाई को बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे का उद्घाटन करते हुए इसके खिलाफ बोला था। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को इस चेतावनी को तब और बढ़ा दिया जब मुख्य न्यायाधीश की अगुवाई वाली बेंच ने इस मुद्दे पर सुझाव दिया कि वित्त आयोग उन राज्यों को धन के प्रवाह को विनियमित करने पर विचार करे जो सब्सिडी दे रहे हैं। सीजेआई ने कहा, 'समय के साथ हमारी राजनीति में गंभीर विकृतियां आ गई हैं। राजनीति में लोगों को सच बताने का साहस होना चाहिए। लेकिन कुछ राज्यों में हम मुद्दों को कालीन के नीचे धकेलने की प्रवृत्ति देखते हैं। यह तत्काल तो राजनीतिक रूप से लाभदायक लग सकता है। लेकिन आज की इन चुनौतियों का समाधान नहीं करना हमारे बच्चों और आने वाली पीढ़ियों पर बोझ डालने जैसा है। पीएम मोदी ने कहा, 'उत्पादन कंपनियां बिजली का उत्पादन कर रही हैं, लेकिन उन्हें भुगतान नहीं हो रहा है। जिस तरह एक घर बिना खाना पकाने के ईंधन के भूखा रह जाएगा, भले ही उसके पास मसाले हों। कोई वाहन बिना ईंधन के नहीं चलेगा, बिजली नहीं होने पर सब कुछ ठप हो जाएगा। अगर एक राज्य में बिजली क्षेत्र कमजोर हो जाता है तो इसका असर पूरे देश पर पड़ता है। पीएम मोदी ने कहा कि यह राजनीति का नहीं बल्कि राष्ट्रनीति एवं राष्ट्र-निर्माण से जुड़ा हुआ मुद्दा है। बिजली देश के विकास के लिए अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि कई राज्यों पर इन बिजली कंपनियों का एक लाख करोड़ रुपये से अधिक बकाया है। इसके अलावा विभिन्न सरकारी विभागों एवं स्थानीय निकायों की भी इन बिजली वितरण कंपनियों पर 60,000 करोड़ रुपये से अधिक देनदारी बाकी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि राज्य सरकारों ने अभी तक बिजली कंपनियों को 75,000 करोड़ रुपये की अपनी सब्सिडी प्रतिबद्धता भी पूरी नहीं की है। राज्यों की तरफ से उपभोक्ताओं को दी जाने वाली रियायती बिजली के एवज में यह सब्सिडी राशि दी जानी है।

एमबीए, एमएससी और पीजीडीसीए की विभिन्न सेमेस्टर की अगस्त पहले सप्ताह से परीक्षा शुरू

इंदौर। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (डीएवीवी) ने स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के विभिन्न सेमेस्टर की परीक्षाओं का शेड्यूल जारी कर दिया है। अगस्त पहले सप्ताह से परीक्षाएं रखी गई है। सात एमबीए, तीन एमएससी और पीजीडीसीए पाठ्यक्रम में करीब पंद्रह छात्र-छात्राएं है, जो अलग-अलग केंद्रों पर परीक्षा देंगे। विश्वविद्यालय प्रशासन के मुताबिक 35 से 40 केंद्र रखे है। यहां नकल रोकने के लिए तीन उड़ानदस्ते की टीमों को जिम्मेदारी सौंपी है। अधिकारियों का कहना है कि ये परीक्षाएं 50 दिन तक चलेगी। कुछ एमबीए पाठ्यक्रम की परीक्षाएं अक्टूबर में खत्म होगी।

विश्वविद्यालय ने जुलाई अंतिम सप्ताह में एमबीए दूसरे-चौथे, एमएससी व पीजीडीसीए पाठ्यक्रम के दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा का टाइम टेबल जारी किया है। 4 अगस्त से शुरू होने वाली परीक्षाएं तीन अक्टूबर तक चलेगी। सबसे अधिक एमबीए नियमित पाठ्यक्रम में विषय है। एमबीए (फुल टाइम) के दूसरे सेमेस्टर की 23 अगस्त से 15 सितंबर और चौथे सेमेस्टर 18 अगस्त से तीन अक्टूबर तक रहेगी, जिसमें नियमित और एटीकेटी वाले विद्यार्थी शामिल हो सकते है। सबसे अधिक इन पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों की संख्या है।

एमबीए दूसरे सेमेस्टर के मार्केटिंग मैनेजमेंट 25 अगस्त से तीन सितंबर, इंटरनेशनल बिजनेस, अस्पताल प्रशासन, फारेन ट्रेड 23 अगस्त से 7 सितंबर और बिजनेस इकानोमिक 23 अगस्त से 5 सितंबर तक चलेगी। जबकि एमएससी कम्प्युटर साइंस-इंफोमेशन टेक्नोलाजी 23 अगस्त से 1 सितंबर, एमएससी बायोटेक्नोलाजी 23 से 29 अगस्त और पीजीडीसीए और डीएफडीएम दूसरे सेमेस्टर 4 से 18 अगस्त तक रहेगी।

परीक्षा नियंत्रक डा. अशेष तिवारी ने कहा कि पीजी परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों का अनुक्रमांक जारी कर दिया है। वे बताते है कि पेपर खत्म होते ही उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन शुरू किया जाएगा। ताकि जल्द से जल्द रिजल्ट निकाला जा सके। वैसे मूल्यांकन केंद्र को रिजल्ट निकालने के लिए तीस दिन की डेडलाइन दे रखी है।

आईआईटी प्राध्यापक सरकारी शिक्षकों को सिखाएंगे गणित व विज्ञान पढ़ाने के गुर

भोपाल। प्रदेश के सरकारी स्कूलों के शिक्षकों को आइआइटी के प्रोफेसर्स विज्ञान, गणित और प्रौद्योगिकी की छोटी-छोटी क्रियाओं को सिखाएंगे, ताकि वे बच्चों को आसानी से इन्हें समझा सकें। इसके लिए दैनिक जीवन में होने वाली वैज्ञानिक क्रियाओं को उदाहरण के तौर पर लिया जाएगा। सरकारी स्कूल के शिक्षकों को आसानी से सिखाने के लिए आइआइटी इंदौर के विशेषज्ञों ने सेंटर फार क्रिएटिव लर्निंग (सीसीएल) के तहत शिक्षकों के लिए 'स्टेमऽ (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग व गणित) कोर्स तैयार किया है। पांच से सात अगस्त तक 'स्टेमऽ के लिए चयनित सरकारी स्कूलों के शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। यह प्रशिक्षण राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अंतर्गत आइआइटी इंदौर द्वारा सरकारी स्कूलों के शिक्षकों को गणित, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विषय के लिए दिया जाएगा। राज्य शिक्षा केंद्र ने इस संबंध में आदेश जारी कर दिए हैं। पहले चरण में आगर-मालवा, शाजापुर, उज्जैन, रतलाम व मंदसौर जिले के 150 से अधिक शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके बाद अन्य जिलों के शिक्षकों को भी प्रशिक्षण दिया जाएगा।

विज्ञानी पद्धति से समझाएंगे भौतिकी व गणित-आइआइटी के प्रोफेसर शिक्षकों को विज्ञानी पद्धति से समझाएंगे। इसमें भूमंडलीय ऊष्मीकरण और हरित ऊर्जा, गणितीय समीकरणों का महत्व, त्रिभुज, सर्कल, चतुर्भुज बनाकर रेखागणित की बारीकियां और सूत्रों का रेखांकन आदि की जानकारी दी जाएगी। वेबलाइन (लहरों) के माध्यम से त्रिकोणमिति और इलेक्ट्रिक मोटर के साथ भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों के बारे में जानकारी दी जाएगी।

देश में मंकीपॉक्स का छठा मामला सामने आया, दिल्ली में 35 साल का एक शख्स पाया गया संक्रमित

नई दिल्ली। कोरोना महामारी के बाद अब मंकीपॉक्स का भी खतरा मंडराने लगा है। दुनिया के कई देशों में मंकीपॉक्स ने अपने पैर पसार लिए हैं। भारत में भी छठा मामला पाया गया है। दिल्ली में 35 वर्ष का एक शख्स मंकीपॉक्स से संक्रमित पाया गया है। जानकारी के मुताबिक यह शख्स नाइजीरिया का है। लेकिन वह फिलहाल दिल्ली में रहता है। उसने अभी कोई विदेश यात्रा नहीं की थी। आपको बता दें कि दिल्ली में मंकीपॉक्स का यह दूसरा मामला है। अब तक जो देश में से पांच मंकीपॉक्स के मरीज थे। उनमें से एक की मृत्यु हो गई है। जानकारी के मुताबिक दिल्ली में रहने वाला एक 35 वर्षीय नाइजीरियाई व्यक्ति का मंकीपॉक्स टेस्ट पॉजिटिव आया है।

बताया जा रहा है कि संक्रमित व्यक्ति का हाल ही में विदेश यात्रा का इतिहास नहीं है, यह भारत में मंकीपॉक्स का छठा मामला है। सूत्रों के मुताबिक, नाइजीरियाई व्यक्ति पिछले पांच

दिनों से बुखार से जूझ रहा है और उसके शरीर पर दाने भी हैं। एलएनजेपी अस्पताल में अफ्रीकी मूल के दो और संदिग्ध मरीजों को भी भर्ती कराया गया है। वही राजस्थान में भी आज एक मंकीपॉक्स का संदिग्ध मामला सामने आया है। 20 साल का यह मरीज राजस्थान के किशनगढ़ का है जिसे जयपुर के राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंस में भर्ती कराया गया है। उसके सैंपल को फिलहाल पुणे भेजा जा चुका है। आपको बता दें कि देश में 22 वर्षीय मंकीपॉक्स संक्रमित एक मरीज की मौत हो गई है। वह यूएई से लौटा था।

जूडो के 48 किलोग्राम में सुशीला देवी को रजत पदक, विजय कुमार ने जीता कांस्य

कॉमनवेल्थ गेम्स में एक बार फिर से भारत ने अपना दम दिखाया है। भारत की सुशीला देवी ने जूडो में रजत पदक अपने नाम किया है। सुशीला देवी को फाइनल में हार का सामना करना पड़ा। सुशीला देवी को जूडो के 48 किलोग्राम में रजत पदक हासिल हुआ है। वहीं, भारतीय जुडोका विजय कुमार ने पुरुषों की 60 किग्रा स्पर्धा में साइप्रस के पेट्रोस क्रिस्टोडौलाइड्स को हराकर कांस्य पदक जीता।सुशीला देवी ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए अपना दम दिखाया है। इसके साथ ही भारत का इस बार का यह सातवा पदक है। वहीं तीसरा रजत पदक है। सुशीला देवी से पहले बिंदियारानी देवी और संकेत ने वेटलिफ्टिंग में

रजत पदक जीता था।

भारत की सुशीला देवी लिकाबम ने राष्ट्रमंडल खेलों की जूडो स्पर्धा के महिला 48 किग्रा वर्ग में रजत पदक जीता। फाइनल में सुशीला देवी का मुकाबला दक्षिण अफ्रीका की मिशेला वाइटबूइ से था। व्हीबोई ने सुशीला देवी को आर्म लॉक में फंसा कर नीचे गिरा दिया। सुशीला देवी खुद को छुड़ाने के लिए लगातार संघर्ष करती रही। लेकिन मैच रेफरी ने बाद में अफ्रीकी खिलाड़ी को विजेता घोषित कर दिया। सुशीला ने ग्लास्गो राष्ट्रमंडल खेल 2014 में भी रजत पदक जीता था। सुशीला ने इससे पहले सेमीफाइनल में मॉरीशस की प्रिसिला मोरांड को इप्पोन को शिकस्त देकर अपना पदक पक्का किया था। उन्होंने क्वार्टर फाइनल में मालावी की हैरियट बोनफेस को हराया था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट कर लिखा कि शुशीला देवी लिकमबम द्वारा असाधारण प्रदर्शन से उत्साहित हूं।

विदेश से मेडिकल की पढ़ाई करने वाले छात्रों को केंद्र ने दी राहत

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने दिए आदेश में कहा है कि भारतीय छात्र जो अपने अंडर ग्रेजुएट मेडिसिन कोर्स के अंतिम वर्ष में थे, (कोरोना महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते भारत लौट आए थे) और अपनी पढ़ाई पूरी कर ली है, जिन्होंने संबंधित मेडिकल यूनिवर्सिटी या कॉलेज से, 30 जून को या उससे पहले पाठ्यक्रम पूरा करने का प्रमाण पत्र हासिल कर लिया है, उन्हें विदेशी चिकित्सा स्नातक परीक्षा में बैठने की अनुमति होगी।

भारत से हर वर्ष लाखों छात्र मेडिकल की पढ़ाई करने के लिए विदेशों में जाते हैं। इनमें से ज्यादातर पूर्व सोवियत यूनियन के देशों या चीन जाते हैं। दरअसल, विदेशों में एमबीबीएस की पढ़ाई करने के लिए कम खर्चा करना पड़ता है। इसके बाद छात्र जो विदेशों से एमबीबीएस की डिग्री हासिल करते हैं, उन्हें भारत में मेडिकल प्रैक्टिस करने के लिए पहले फॉरेन मेडिकल ग्रेजुएट एग्जाम (एफएफजीई) क्वालीफाई करना पड़ता है। जो छात्र इस परीक्षा को क्वालीफाई

करते हैं, सिर्फ उन्हें ही भारत में मेडिकल प्रैक्टिस करने का मौका मिलता।

नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जामिनेशन साल में दो बार फॉरेन मेडिकल ग्रेजुएट एग्जाम का आयोजन करता है. हाल ही में ही फॉरेन मेडिकल ग्रेजुएट एग्जामिनेशन का आयोजन 4 जून 2022 में किया गया था, जिसके रिजल्ट से चौंकाने वाले आंकड़े सामने निकल कर आए थे। दरअसल, 4 जून को आयोजित इस परीक्षा में कुल 22092 स्टूडेंट ने भाग लिया था, जिसमें से मात्र 2346 ही पास हुए। यानी रिजल्ट 10.61 प्रतिशत रहा। दिसंबर-2021 में आयोजित एफएमजीई परीक्षा का परिणाम 23.91 प्रतिशत रहा था। इससे पहले जून-2020 के सेशन में भी मात्र 9.53 प्रतिशत रिजल्ट रहा था।

औसतन परीक्षा का परिणाम 20 से 22 फीसदी रहता है। यह परीक्षा अपने नियमों के कारण विवादों में रहती है. एबीई, एफएमजीई का आयोजन ऑनलाइन मोड में करता है। परीक्षा के बाद न आंसर-की रिलीज होती है और न ही छात्रों को ऑब्जेक्शन का अवसर दिया जाता है। वहीं इसकी कट ऑफ भी तय है। स्टूडेंट्स को एग्जाम क्वालिफाई करने के लिए 300 में से 150 अंक हासिल करने ही होते हैं। विदेशों में मेडिकल की पढ़ाई का खर्च होना तो एक बात है, सबसे जरूरी बात है मेडिकल एजुकेशन की गुणवत्ता है। भारत में मेडिकल की पढ़ाई काफी कठिन होती है। डॉक्टर बनने की चाह रखने वाले छात्रों की पहली पसंद भारत ही होता है। विदेशों में मेडिकल की पढ़ाई करने जाने वाले ज्यादातर छात्रों में वहीं शामिल होते हैं, जो भारत के मेडिकल कॉलेजों में एडमिशन के लिए होने वाली नीट परीक्षा पास नहीं कर पाते। नीट का आयोजन हर साल नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा कराया जाता है।

दिल्ली में 896 सार्वजनिक चार्जिंग प्वाइंट और 103 बैटरी स्वैपिंग स्टेशन स्थापित कर रहे

नई दिल्ली। दिल्ली को इलेक्ट्रिक व्हीकल कैपटिल के रूप में बनाने का काम जारी है। दल्लिी सरकार की ओर से इलेक्ट्रिक व्हीकल की सेल को बढ़ाने का काम हो रहा है। केजरीवाल सरकार

दल्लिीभर में ईवी चार्जगि स्टेशनों की स्थापना कर ही है, जसिसे कि लोगों को वाहन चार्जगि की समस्या नहीं आए। दिल्ली ट्रांसको लिमिटेड द्वारा सार्वजनिक भूमि पार्सल पर 100 ईवी चार्जिंग/स्वैपिंग स्टेशन स्थापित करने का काम होगा। इस लेकर वर्कगि ग्रुप ने टेंडर प्रक्रयि की स्थतिि का रव्यिू भी कयिा है। इनमें से चार को टेंडर के स्वीकृत पत्र (एलओए) भी सौंप दएि गए हैं। बताया जाता है कि मौजूदा समय में डीटीएल टेंडर के तहत 896 सार्वजनिक चार्जिंग प्वाइंट और 103 बैटरी स्वैपिंग स्टेशन स्थापित किए जा रहे हैं। चार्जिंग स्टेशनों के पहले सेट का उद्घाटन अगस्त 2022 में हो सकते है। ईवी चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर वर्किंग ग्रुप ने भारत में ईवी लीडर के रूप में दिल्ली के उभरने के लिए एक सक्षम वातावरण बनाने के लिए लगातार कदम उठाए हैं। दिल्ली ने ईवी चार्जिंग प्वाइंट्स के व्यापक नेटवर्क की स्थापना में देश का नेतृत्व किया है। वर्तमान में दिल्ली में 1892 स्थानों पर कुल 2356 चार्जिंग प्वाइंट और 234 बैटरी-स्वैपिंग स्टेशन चालू हैं।

दिल्ली में चार्जिंग स्टेशनों का एक कुशल, लागत प्रभावी और न्यायसंगत नेटवर्क स्थापित करने के लिए विभागों के बीच समन्वय की आवश्यकता है। उन्होंने दिल्ली को भारत की ईवी राजधानी के रूप में स्थापित करने के दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल के विजन के नेतृत्व में कार्य समूह के प्रयासों के लिए सभी का आभार जताया।

तिरंगा सिलाई में जुटी शहरी आजीविका मिशन की महिलाएँ

खरगोन। जिले के नगरीय निकायो में दिनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन की महिला स्वसहायता समूहों द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के तहत स्वतंत्रता दिवस को खास बनाने के लिए 11 अगस्त से 17 अगस्त तक हर घर तिरंगा अभियान के तहत तिरंगा सिलाई कार्य कर रही है। इस योजना के तहत तमाम घरों में राष्ट्रीय ध्वज लहराते हुए नजर आएंगे। जिले में भी हर घर तिरंगा अभियान जोर पकड़ रहा है। हर घर तिरंगा फहराने के लिए बडी संख्या में तिरंगे

महिला स्व सहायता समूह द्वारा तैयार किये जा रहे। इसके लिए नागरिकों को निकाय स्तर पर शहरी स्व सहायता समूहों के द्वारा तैयार किए गए तिरंगे विक्रय केन्द्रों से क्रय कर समूहों का उत्साहवर्धन करने की अपील की गई है।

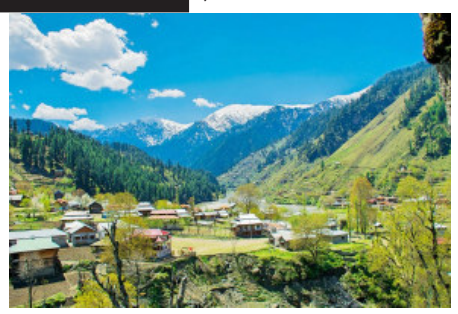

अगर करना चाहते हैं कश्मीर की खूबसूरती का दीदार, साइकिल किराए ले निकले जाओ यार

श्रीनगर। विदेशों के अलावा भारत में भी कई पर्यटक स्थलों पर यह व्यवस्था है, कि आप यदि वहां घूमने गए हैं, तब साइकिल या स्कूटी आदि किराए पर लेकर घूम सकते हैं। खास तौर पर जो लोग पर्यावरण प्रेमी होते हैं उनकी पहली पसंद साइकिल होती है क्योंकि यह स्वास्थ्य की रक्षा के साथ-साथ पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखने में भी मददगार है। हर पर्यटक की चाहत होती है कि वह कश्मीर की खूबसूरती का एक बार जरूर दीदार करे। हाल के दिनों में जिस तरह हालात सामान्य होने के बाद कश्मीर में पर्यटकों की आवक बढ़ी है। इसके बाद यहां वाहनों के जरिये होने वाला प्रदूषण भी बढ़ा है। इसके बाद कुछ स्थानीय युवकों ने एक शानदार पहल करते हुए साइकिल किराये पर देना शुरू किया है, ताकि जो पर्यटक साइकिल से इधर उधर जाना चाहते हैं वह कम दामों में आवागमन कर सकें। आप अपने होटल से बाहर आइए और साइकिल से डल झील या अन्य जगहों पर घूमने निकल जाइये।

बता दें कि श्रीनगर के 25 वर्षीय युवक मोहम्मद उबैद नजीर की ओर से शुरू की गई पहल को अच्छी प्रतिक्रिया भी मिल रही है। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य यह है कि कश्मीर के मुख्य स्थानों पर साइकिल स्पॉट बनाए जाए, ताकि लोगों को आसानी हो। उन्होंने कहा कि हम यह सुविधा भी दे रहे हैं कि आप एक स्पॉट से साइकिल लेकर दूसरे स्पॉट पर उसे छोड़ सकें इससे आपको साइकिल लौटाने के लिये वापस वहां नहीं आना पड़ेगा जहां से आपने उस किराये पर लिया था।

एक अगस्त से यात्री वाहनों में नहीं लग सकेंगे पैनिक बटन व वीएलटीडी

भोपाल। परिवहन विभाग ने एक अगस्त 2022 से यात्री वाहनों में व्हीकल लोकेशन ट्रेकिंग डिवाइस (वीएलटीडी) व पैनिक बटन (आपातकालीन बटन) को अनिवार्य किया है, लेकिन विभाग अब तक न तो डिवाइस लगाने वाली कंपनियां तय कर सका न ही कंट्रोल कमांड सेंटर का निर्माण कार्य पूरा करा सका है। इस कारण एक अगस्त से यात्री वाहनों की निगरानी संभव नहीं है। यही वजह है कि विभाग अब आदेश में संशोधन कराने की तैयारी में है। परिवहन विभाग ने निर्भया फंड से भोपाल स्थित परिवहन विभाग के कैंप आफिस में 15 करोड़ 40 लाख की लागत से कंट्रोल कमांड सेंटर तैयार किया है। इस सेंटर से यात्री वाहनों की 24 घंटे निगरानी की जाएगी। 16 जून 2022 को परिवहन विभाग ने अधिसूचना जारी कि 31 दिसंबर 2018 तक जितने भी यात्री वाहन रजिस्टर्ड हुए हैं, उनमें पैनिक बटन व वीएलटीडी को अनिवार्य किया जाए। बस व

टैक्सी के लिए इस व्यवस्था को अनिवार्य किया गया है। जुलाई के अंत तक इन उपकरणों को लगवाने के बाद कंट्रोल कमांड सेंटर से निगरानी शुरू होनी थी।

विभाग ने जारी की थी एसओपी, 14 कंपनियों ने दिखाई है रुचि- परिवहन विभाग ने स्टैंडर्ड आफ प्रोसीजर (एसओपी) के अनुसार ये उपकरण के लिए एसओपी जारी की थी। एआइएस 140 अनुरूप दोनों उपकरण लगाए जाने हैं। विभाग ने एआइएस 140 माडल फीड किए हैं। इसके लिए 14 कंपनियों ने दोनों डिवाइस को लगाने के लिए आवेदन किए थे। इनमें से कंपनी तय होना है। इसके अलावा विभाग ने सात सदस्यीय कमेटी भी बना दी है। यह कमेटी वाहनों में लगे डिवाइस की जांच करने के बाद कंट्रोल कमांड सेंटर में डेटा फीड करेगी।

इसलिए लगाए जा रहे हैं उपकरण- बस, टैक्सी, कैब में महिला सुरक्षा की दृष्टि के हिसाब से उपकरण लगाए जा रहे हैं। आकस्मिक स्थिति में कंट्रोल कमांड सेंटर को अलर्ट मिलेंगे। वाहन के रूट का अलर्ट मिलेगा। यदि वाहन निर्धारित रूट से अलग जाता है तो अलर्ट मिल जाएगा। जिस रूट का परमिट मिला है, वह उस पर ही दौड़ सकेगा। व्हीकल ट्रेकिंग डिवाइस व पावर केबिल हटाने पर कंट्रोल कमांड सेंटर में सूचना पहुंच जाएगी। वाहन का रिकार्ड आनलाइन संधारित किया जाएगा और यह तीन साल तक सुरक्षित रहेगा। वाहन मालिक अपनी गाड़ी का रियल टाइम लोकेशन ले सकेंगे। स्टाफ वाहन के साथ भी गड़बड़ी नहीं कर सकेंगे।

मुद्रक एवं प्रकाशक संजय अग्रवाल द्वारा गोल्ड कॉईन सेवा ट्रस्ट के पक्ष में राजा ऑफसेट प्रिंटर्स, 863/9, नेहरू नगर, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित तथा 54-55, चाणक्यपुरी, अन्नपूर्णा रोड, इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक : संजय अग्रवाल* (*पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)